AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

महादेवी वर्मा के साहित्य में भारतीय परंपरा स्त्री विमर्श का विश्लेषण

ORIGINAL ARTICLE

Author
रेणु साहू
शोधार्थी
हिंदी विभाग
भारतीय विश्वविद्यालय
दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

महादेवी वर्मा के गद्य में भारतीय परंपरा का स्वर अत्यंत गहरा, संवेदनशील और मानवीय है। उन्होंने परंपरा को केवल रीति–रिवाज के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और जीवन–दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया है। हिन्दी गद्य साहित्य में नारी विमर्श का प्रारम्भ छायावाद से माना जाता है। स्त्री विमर्श में स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को उजागर किया जाता है। महादेवी वर्मा ने अपने गद्य साहित्य में स्त्री की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। इनका निबंध 'श्रृंखला की कड़ियाँ' स्त्री विमर्श का सार्थक उदाहरण है। उन्होंने स्त्रियों दयनीय दशा पर जो लेखन का किया है, उसकी कल्पना करना कठिन है। कवित्री द्वारा महिलाओ के हितों की रक्षा के लिए जीवन भर कार्य करती रहीं, क्योंकि वे खुद एक स्त्री थी इसलिए उनकी समस्याओं से भली भाँति परिचित थी और वह समझती थीं। स्त्री की दशा को व्यक्त करती हुई अपने गद्य में लिखती है– 'पुरुष के अन्धानुकरण ने स्त्री के व्यक्तित्व को अपना दर्पण बनाकर उसकी उपयोगिता तो सीमित करी ही दी, साथ ही समाज को भी अपंग बना दिया। पुरुष समाज का न्याय है, स्त्री दयाय पुरुष प्रतिशोधमय क्रोध है, स्त्री क्षमाय पुरुष शुष्क कर्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति और पुरुष बल है, स्त्री हृदय की प्रेरणा। संकेतक समाज में नारी, परिवार में नारी महादेवी वर्मा का गद्य भारतीय परंपरा और आधुनिक चेतना का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करता है। वे परंपरा का सम्मान करती हैं, लेकिन उसकी रूढ़िय वादी परंपरा का विरोध भी करती हैं।

मुख्य शब्द

करुणा, संवेदना, त्याग, परम्परा, नैतिक मूल्य, स्त्री.

भूमिका

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य के छायावाद युग की प्रमुख साहित्यकार होने के साथ–साथ एक उत्कृष्ट गद्यकार, शिक्षाविद् और समाज–सुधारक भी थीं। उनके गद्य साहित्य में भारतीय संस्कृति, मानवीय संवेदना, करुणा, स्त्री चेतना तथा नैतिक जीवन–मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उन्होंने भारतीय परंपरा को केवल प्राचीन रीति–रिवाजों तक सीमित नहीं माना, बल्कि उसे जीवन–दर्शन, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय मूल्यों का आधार माना। उनके निबंधों, संस्मरणों और रेखाचित्रों में भारतीय समाज की सांस्कृतिक विरासत, पारिवारिक मूल्य, प्रकृति–प्रेम, आध्यात्मिक दृष्टि तथा लोकजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। साथ ही वे परंपरा में व्याप्त रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों की आलोचना करते हुए उसके प्रगतिशील और मानवीय स्वरूप को स्थापित करती हैं। इस प्रकार महादेवी वर्मा का गद्य भारतीय परंपरा और आधुनिक चेतना के संतुलित समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है।[1] महादेवी वर्मा का रचना स्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ नारी उत्प्रेरक की भूमिका से संपन्न है। इन्हें आधुनिक साहित्य की मीरा भी कहा जाता है। अगर मीरा जैसी वेदना उनमें है तो मीरा जैसी विद्रोहिणी त्याग तपस्विनी भी उनमें विद्यमान है। इन्होंने कविता लिखने के साथ–साथ गद्य में भी रचनाएँ लिखी। महादेवी वर्मा का दृष्टिकोण

उदारवादी व नारीवाद से अधिक मेल खाता है। महादेवी वर्मा के समय में स्त्री–विमर्श जैसी कोई धारा न थी पर यह इनकी दूरदृष्टि ही थी जो वर्तमान, समय में भी हमें उनकी रचना से स्त्री–विमर्श की अनुगूंज देखने को मिलती है। महादेवी वर्मा जानी–मानी चित्रकार भी थी, उनका विचार है कि भारत की स्त्री तो भारत माँ का प्रतीक है। स्त्री शक्ति स्वरुप है स्त्री को समझ में वह हर अधिकार मिलना चाहिए जो एक पुरुष को मिलता है कवित्री ने हमेशा अपने गद्य में स्त्री के अधिकार की बात की है।[2]

महादेवी वर्मा के साहित्य में भारतीय परंपरा

महादेवी वर्मा का गद्य भारतीय संस्कृति की आत्मा से जुड़ा हुआ है। उनके साहित्य में करुणा, प्रेम, सेवा, त्याग, सहिष्णुता और मानवता जैसे भारतीय जीवन–मूल्यों का सुंदर चित्रण मिलता है। वे मानती थीं कि भारतीय संस्कृति का वास्तविक आधार मनुष्य और समस्त प्राणियों के प्रति संवेदना है। उनकी प्रसिद्ध कृतियों अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, मेरा परिवार तथा श्रृंखला की कड़ियाँ में भारतीय जीवन और संस्कृति का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। उनके गद्य में परिवार को भारतीय समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई माना गया है। वे परिवार में प्रेम, त्याग, सेवा और पारस्परिक सहयोग को भारतीय परंपरा का मूल आधार मानती हैं। साथ ही वे स्त्री को केवल परिवार तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उसे समाज और राष्ट्र के निर्माण की समान भागीदार मानती हैं। श्रृंखला की कड़ियाँ में उन्होंने स्त्री की स्थिति का गहन विश्लेषण करते हुए परंपरा के नाम पर होने वाले अन्याय का विरोध किया है।[3] महादेवी वर्मा के गद्य में प्रकृति के प्रति भारतीय दृष्टिकोण भी स्पष्ट दिखाई देता है। वे पशु–पक्षियों और समस्त जीव–जगत के प्रति आत्मीयता का भाव रखती हैं। कवित्री के गद्य में भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का भी विशेष स्थान है। वे सत्य, करुणा, आत्मसंयम, सेवा और त्याग जैसे मूल्यों को मनुष्य के जीवन का आधार मानती हैं। वे समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों का विरोध करती हैं, किंतु भारतीय संस्कृति के उदात्त और मानवीय स्वरूप का समर्थन करती हैं। उनके विचारों में परंपरा का अर्थ जड़ता नहीं, बल्कि समयानुकूल परिवर्तन के साथ जीवन–मूल्यों का संरक्षण है। महादेवी वर्मा के गद्य की भाषा सरल, साहित्यिक, भावपूर्ण और संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी अत्यंत प्रभावशाली है। उनकी शैली में संवेदनशीलता, आत्मीयता और सांस्कृतिक गरिमा का सुंदर समन्वय मिलता है।[4]

भारतीय समाज में स्त्री

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही स्त्री को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका, जिसकी वह अधिकारिणी है। वर्तमान में भी स्त्री को समाज में भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान में स्त्री की स्थिति में कुछ परिवर्तन अवश्य हुआ है किंतु इतना नहीं हुआ जिससे कहा जा सके कि समाज में स्त्री को वह स्थान प्राप्त हो गया है जिसकी वह अधिकारिणी है। आज वह पहले की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से स्वाधीन, सामाजिक क्षेत्र में स्वच्छंद होने के बावजूद वन्दिनी ही है। आज की स्त्री की विषय में कहा जाता है– आज की विद्रोहशील स्त्री व्यावहारिक जीवन में अधिक कठोर है, गृह में अधिक निर्मम और शुष्क, आर्थिक दृष्टि से अधिक स्वाधीन, सामाजिक क्षेत्र में अधिक स्वच्छन्द, परन्तु अपनी निर्धारित रेखाओं की संकीर्ण सीमा की वन्दिनी है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है।[5] कई युग बीत गये। समाज में बहुत कुछ परिवर्तित हो गया किन्तु स्त्री की स्थिति में परिवर्तन नहीं हुआ। पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों का महत्व बताया जाता है कि वे समाज के लिए, अपने परिवार के लिए बहुत कुछ करता है, परन्तु स्त्री के महत्व को अनदेखा कर दिया जाता है। यदि पुरुष धन कमाता है तो स्त्री भी तो सन्तान का पालन–पोषण कर अपने कर्तव्य का निर्वहन करती है तो फिर उसे वह अधिकार क्यों नहीं मिलता, एक स्त्री एक घर को नहीं पूरे समाज को आगे बढ़ती है संसार के निर्माण में स्त्री कहीं महत्वपूर्ण योगदान है. पुरुषों की भाँति वह भी अपने कर्तव्य का पालन करती है लेकिन उसे उसके अधिकारों से वंचित रखा जाता है। महादेवी के वर्मा के गद्य में स्त्री के दीन–हीन दशा का चित्रण किया गया है। स्त्री को शिक्षा से वंचित कर, अधिकार–विहीन कर, समाज में बराबरी का दर्जा न देकर फिर उससे स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक की आशा करना उचित नही है। उच्च शिक्षा प्राप्त नारियों ने भी सामान्य नारियों की तरफ से मुँह मोड़ लिया है। वे अपनी ही दुनिया में मस्त हैं। वे अन्य नारियों के विषय में सोचती ही नहीं हैं, उनके अधिकारों के लिए पैरवी करने की बात करना बेमानी है। शिक्षित नारियों के इस व्यवहार की वजह से सामान्य नारियाँ उनसे आशा करना छोड देती हैं। जब स्त्री ही स्त्रीयों की समस्याओं को नजरअंदाज करने लगीं तो फिर वे किससे अपने अधिकारों के लिए आशा करें– शिक्षा, चिकित्सा आदि विभागों में कार्य करने वाली जागृत महिलाओं ने अपना एक भिन्न समाज बना डाला है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्री में अनेक गुण विद्यमान होते हुए भी वह समाज में अपना स्थान नहीं बना पायी है।[6]

परिवार में स्त्री

स्त्री की दशा के लिए समाज के साथ–साथ परिवार भी जिम्मेदार है। जिस परिवेश में पुरुष का विकास होता है उससे भिन्न परिवेश में स्त्री का विकास होता है। उसे परम्परागत रूढियों का पालन करना होता है। परिवार उसके स्वच्छन्द विकास में बाधक बनता है। उसे जन्म से ही परिवार में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। पिता के घर में, ससुराल में दोनों ही जगह उसकी यथास्थिति में कोई परिवर्तन परिलक्षित नहीं होता। ससुराल में उसे वही परिवेश मिलता है जो वह अपने पिता के घर में देखती चली आ रही है। नारी अभिशाप उसके जन्म के साथ ही उसे धरोहर के रूप में मिल जाता है।[7] माता–पिता का सबसे पहला ध्यान उसके विवाह की ओर जाता है। यदि कन्या माता–पिता के किसी आनुवांशिक बीमारी के कारण बीमार रहती है तो भी इसके लिए उसका ही दोष समझा जाता है। इस बीमारी के कारण यदि वह शारीरिक और मानसिक रूप से विवाह के लिए समर्थ नहीं होती तब भी उसका विवाह कर दिया जाता है। परिवार में जन्म से स्त्री के प्रति भेदभाव शुरू हो जाता है। बचपन में कुछ समय खेल में बीत जाता है। थोड़ी बड़ी होने पर घर के कार्यों में संलग्न कर दी जाती है। जहाँ बेटे के लिए शिक्षा से लेकर अनेक अधिकार की बात की जाती है, वहीं बेटी को पराया धन समझकर उसे उसके अधिकारों से वंचित किया जाता है– जीवन के आरम्भिक वर्ष कुछ खेल में, कुछ गृहकार्यों के सीखने में व्यतीत कर जब से वे केवल शाब्दिक अर्थवाले अपने गृह में चरण रखती हैं तब से उपेक्षा और अनादर की अजस्र वर्षा में ठिठुरते हुए मृत्यु के अन्तिम क्षण गिनती हैं। जिस घर में जन्म लेकर बेटा अपने शारीरिक, मानसिक विकास की ओर अग्रसर होता है, उसी घर में बेटी को उसकी नियति पर छोड़ दिया जाता है।[8] उसकी इच्छाओं, अभिलाषाओं को यह कहकर दरकिनार कर दिया जाता है कि वह अपनी इच्छाओं को अपने ससुराल में पूरा करेगी। ससुराल में भी उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, कितने अधिकार दिए जाते है? किसे से छुपा नहीं है। उच्च वर्ग की नारियों को उसके अधिकार तो मिलने लगे हैं किन्तु मध्यम वर्ग की नारियों को अभी भी संघर्ष करना पड़ रहा है। उन्हें अपनी इच्छाओं और अभिलाषाओं की बली देनी पड़ती है। शारीरिक एवं मानसिक क्लेशों के कारण वे पशु के समान अपना जीवन व्यतीत करने को बाध्य हैं– मध्यम गृहस्थ की गृहिणी को अपनी इच्छाएँ, अभिलाषाएँ कुचल कर जीवित रहना पड़ता है और इसके साथ ही शारीरिक क्लेशों का अन्त न होने से उनका सम्पूर्ण जीवन अज्ञान पशु के जीवन की स्मृति दिलाता रहता है।[9] निम्न वर्ग की नारियों की स्थिति और भी निराशाजनक है। उन्हें सुबह शाम घर के काम, बच्चे के देखभाल के साथ–साथ बाहर जाकर सुबह से शाम तक मजदूरी करनी पड़ती है और शाम को शराबी पति के अत्याचारों को भी सहन करना पड़ता है। नारी पुरुषों के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर चलना चाहती है। वह पुरुष का प्रत्येक परिस्थिति में साथ देना चाहती है किन्तु पुरुष को यह मंजूर नहीं। उसके प्रत्येक कार्य को सशंकित नजर से देखा जाता है।[10]

स्त्री–विमर्श

'विमर्श' का अर्थ है स्त्री पहचान, स्वायत्तता और सम्मान 'जीवन्त बहस भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति अंतर्विरोधों से भरी हुई है। परंपरा से नारी को शक्ति का रुप माना गया है पर आम बोलचाल में उसे 'अबला' कहा जाता है। हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श की जड़ें अत्यंत प्राचीन काल से पाई जाती रही है। पुरुष स्त्री को अपने से नीचे स्तर पर रखना चाहता है वह कहता है कि अगर नारी पढ़ी लिखी है तो मेरे लिए खतरा बन जाएगी। पुरुष के मन में यह भर असुरक्षा की भावना और स्त्री को दबाकर कुचलकर नियन्त्रण में रखने की स्त्री विरोध दृष्टि सदियों से चली आ रही है। स्त्री को केवल घर की चारदीवारी के बीच ही सीमित रखा गया है। पुरुष एवं समाज स्त्री को परदे के अंदर रखना चाहता है। उसे अपने अधिकारों की स्वतंत्रता नहीं है।[11]

श्रृंखला की कड़ियाँ

महादेवी वर्मा ने स्त्री की सामाजिकता से लेकर आर्थिक परंतत्रता का विश्लेषण किया है। इनके समय में स्त्री–विमर्श जैसी कोई धारा न थी। महादेवी वर्मा ने इसमें स्त्री शिक्षा, स्वांतर्त्य, स्वावलंबन, वेश्यावृत्ति, सामाजिक स्थिति व साथ ही स्त्री की राजनीतिक सहभागिता के प्रश्न को भी अपने विश्लेषित मुद्दे के रूप में अपनी इस पुस्तक में उठाया है। महादेवी वर्मा समाज और धर्म में स्त्रियों की दोयम स्थिति पर भी सवाल खड़े करती है।[12] महादेवी व्यंग्य हमारी पूजा अर्चना की सफलता के लिए यह परम आवश्यक है कि हमारा देवता हमारी वस्तुओं पर हमारा अधिकार रहने दे और केवल वही स्वीकार करें जो हम देना चाहते हैं। नारी को भी पुरुष समाज में वही देवत्य दिया है जिसे प्रसाद समझकर ग्रहण करती रहे यथा स्थिति बनी रहे तथा किसी भी वस्तु की मांग न करे। वेश्यावृत्ति इसी पुरुष सता का परिणाम है जिसमें पुरुष के भोग विलास का माध्यम बनती स्त्री को पुरुष की इच्छा का ग्रास बनना पड़ता है। पतित वेश्याओं पर भी महादेवी वर्मा कहती है जैसे दास प्रथा के युग में स्वामियों के निकट दास व्यक्ति न होकर यन्त्र था, वैसे ही समाज सदा से पतित स्त्रियों को भी समझता है।[13]

अतीत के चलचित्र

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों की यह विशेषता भी है कि उनमें चरित्र चित्रण का तत्त्व प्रमुख रहा है। सभी रेखाचित्रों को महादेवी वर्मा ने अब जीवन से ही लिया इसीलिए इनमें उनके अपने जीवन की विविध घटनाओं तथा चरित्र के विभिन्न पहलुओं का प्रत्यारोपण अनायास ही हुआ है।

इसमें मारवाड़ी बाल विधवा आदि के कष्टों का चित्रण महादेवी ने किया है। वह उनके दुख को हमारे परिवेश से जोड़ देता है जिस वय में बालिकाओं को हँसना–बोलना मन को संतृप्त करता है उसी यय में उसे घर की चारदीवारी में कैद होकर अपना जीवन बिताना पड़ता है। दिन–रात काम करके भी उसका समय नहीं गुजरता।[14] उसके साथ मारपीट की जाती है। महादेवी वर्मा द्रवित होकर कहती है। क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा बचाने का कोई उपाय न देखकर कदाचित मैंने जोर–जोर से रोना आंरभ किया, परंतु बच तो वह तब सकी, जब मन से ही नहीं शरीर से बेसुध हो गई, परंतु बहुत दिनों के बाद जब मैंने फिर उसे देखा तब उन बचपन भरी आँखों में विषाद का गाढ़ा रंग चढ़ चुका था और वे ओंठ जिन पर किसी दिन हँसी छिपी सी जान पड़ती थी। ऐसे काँपते थे, मानो भीतर का क्रंदन रोकने के प्रयास से थक गए हों।[15]

दाम्पत्य जीवन को बिखरने से बचाने के लिए अपने पति की दूसरी स्त्री को नियति के रुप में स्वीकार करके एक स्त्री के त्याग, प्रेम, वात्सल्य, कर्तव्यपराणयता आदि की स्थापना करने वालों के रुप में सबिया का रेखाचित्र महादेवी के उन रेखाचित्रों में है जो एक स्त्री के ह्रदय की विशालता का सूचक है। ''इसमें सबिया का पति दूसरी शादी करके गेंदा नामक स्त्री को ले आता है जिसे स्वीकार कर सबिया से उसी की रेशमी साड़ी माँगे जाने पर वह उसे तुरंत उतारकर देती है। अपनी सास के रोकने पर दूसरी पत्नी को घर में स्थान देती है। महादेवी वर्मा कहती है कि गेंदा का उसे घर में रहना सर्वसम्मत हो जाने पर भी सबिया का कष्ट कम नहीं हुआ।''[16]

स्मृति की रेखाएँ

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों से संबंधित महत्वपूर्ण संग्रह 'स्मृति की रेखाएँ' में संकलित पहले ही रेखाचित्र 'भक्तिन में महादेवी वर्मा ने भक्तिन के माध्यम से एक ऐसी स्त्री की कथा कही है जो जन्म से ही अपार वेदना, उपेक्षा, अभाव और कष्टों को सहती आई है। महादेवी वर्मा के घर में काम शुरु करने से पहले और महादेवी के साथ जीवन जीते हुए भक्तिन के संदर्भ में उसके व्यक्तित्य की विशेषताओं और कमजोरियों के संदर्भ में अनेक रोचक पहलुओं से पाठकों को बड़ी ही मार्मिकला और रोचकता के साथ प्रस्तुत करने में महादेवी को सफलता मिली है।[17] 'भक्तिन' के साथ महादेवी का संबंध इतना गहरा था कि वह भक्तिन को अपने व्यक्तित्व और जीवन का जरुरी अंश मानकर उसे खोना नहीं चाहती थी। भक्तिन का चित्र और चरित्र अपनी विविध अर्थछवियों से युक्त है।[18] ग्रामीण संस्कृति और ग्रामीण नारी का प्रतीक भक्तिन के माध्यम से महादेवी वर्मा ने ग्रामीण परिवेश, मान्यताओं, रुढ़ियों, शोषण आदि से संबंधित सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रक्रियाओं एवं पारिवारिक संघर्ष के विविध रूपों का प्रस्तुतीकरण किया है सारा परिवेश जीवंत हो उठा है। भक्तिन की आकृति को शब्द रुप देते हुए महादेवी वर्मा लिखती हैं घटी हुई चाँद को मोटी मैली धोती से ढाँके और मानो सब प्रकार की आहट सुनने के लिए एक कान कपड़े से बाहर निकाले हुए भक्तिन जब मेरे यहाँ सेवक धर्म से दीक्षित हुई तब उसके जीवन के चौथे और अंतिम परिच्छेद का जो अर्थ हुआ, उसकी इति अभी दूर है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि महादेवी वर्मा का स्त्री–विमर्श स्त्रियों को ज्ञान की परम्परा से जोड़ने का माध्यम है। वे पुरुषों की बराबरी नहीं करती बल्कि शिक्षित होने की सलाह देती हैं ताकि वे अपने परिवर को सुसंस्कृत बना सकें महादेवी वर्मा के साहित्य में हम स्त्री के करुणा, संवेदना आदि के चित्रण को मानवीय प्रस्तुतीकरण किया है सारा परिवेश जीवंत हो उठा है।[19]

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा का गद्य भारतीय परंपरा और आधुनिक चेतना का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ मूल्यों करुणा, सेवा, त्याग, सहिष्णुता, मानवता और नारी सम्मान को अपने साहित्य में प्रतिष्ठित किया साथ ही उन्होंने रूढ़ियों, अंधविश्वासों और सामाजिक विषमताओं का साहसपूर्वक विरोध किया। इस प्रकार उनका गद्य केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और समाज के अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आज के बदलते समय में भी उनके विचार भारतीय परंपरा को मानवीय, प्रगतिशील और जीवनोपयोगी रूप में समझने की प्रेरणा देते हैं.महादेवी वर्मा का गद्य हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी अध्याय है। उन्होंने स्त्री को करुणा की वस्तु नहीं, बल्कि चेतना, सम्मान और अधिकार से युक्त व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया। उनके लेखन में स्त्री

की शिक्षा, स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समानता की स्पष्ट माँग दिखाई देती है साथ ही उन्होंने रूढ़ियों, भेदभाव और पुरुषसत्तात्मक मानसिकता का साहसपूर्वक विरोध किया। इस प्रकार महादेवी वर्मा का गद्य स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को समझने, स्त्री की गरिमा को स्वीकार करने और एक समानतामूलक समाज की उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, महादेवी (2008) *मेरा परिवार.* लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज पृ. 70।
2. वर्मा, महादेवी (2008) *अतीत के चलचित्र.* लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज पृ. 44।
3. सुधा सिंह (2004) *ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 12।
4. वर्मा महादेवी (2008) *श्रृंखला की कड़ियाँ.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 91।
5. वहीं, पृ. 92।
6. वर्मा महादेवी (2008) *अतीत के चलचित्र.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 29।
7. वर्मा महादेवी (2014) *स्मृति की रेखाएँ.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 13।
8. तामोको किकुचि (2009) *महादेवी वर्मा की विश्वदृष्टि.* परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 78।
9. तेवतिया विमलेश (2009) *महादेवी वर्मा व्यक्तित्व और कृतिव.* अमर प्रकाशन, मथुरा, पृ. 56।
10. शमा रामकिशोर (1994) *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* विद्या प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 30।
11. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र (2019) *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 89।
12. चतुर्वेदी रामस्वरूप (2002) *हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 56।
13. पाण्डेय, सं. रामजी (1983) *महादेवी प्रतिनिधि गद्य–रचनाएँ.* भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 45।
14. वहीं, पृ. 46।
15. चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2003) *महादेवी वर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व.* लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 46।
16. वर्मा, महादेवी (2008) *श्रृंखला की कड़ियाँ.* लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 34।
17. शुक्ल, रामचन्द्र (2018) *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृ. 23।
18. सिंह, बच्चन (2019) *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास.* राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली, पृ. 34।
19. वाजपेयी, नंददुलारे (2009) *महादेवी वर्मा.* राजकमल प्रा. लि., नई दिल्ली, पृ. 50।

––==00==––